Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शुंगकालीन धार्मिक नीति एवं ब्राह्मण

डॉ. श्री कान्त मिश्र*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शास. महा. मार्तण्ड महाविद्यालय, कोतमा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – पुष्यमित्र शुंग का शासनकाल वैदिक अथवा ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान काल माना गया है। पुष्यमित्र को गोसुंडी अभिलेख में 'सर्वतात का शंकर्षण तथा वासुदेव का पुजारी और अश्वमेध यज्ञ करने वाला' कहा गया है।[1] कालिदास रचित मालविकाग्निमित्र नाटक और अयोध्या शिलालेख से भी पुष्यमित्र शुंग द्वारा सम्पन्न अश्वमेध यज्ञ का विवरण मिलता है। अत: इन विवरणों से स्पष्ट है कि पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्मावलंबी था। पतंजलि जैसे संस्कृत पंडित उसके राजपुरोहित हुए थे। इसलिए पुष्यमित्र के शासनकाल में संस्कृत साहित्य और ब्राह्मण धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार स्वाभाविक था। पुष्यमित्र के शासनकाल में महाभारत का दूसरा संस्करण और मनुस्मृति का प्रथम संस्करण सम्पादित हुआ था। पतंजलि के महाभाष्य और गार्गी संहिता को भी इस युग में ही संकलित किया गया। पुष्यमित्र शुंग ने वैदिक धर्म को राजधर्म बनाया तथा पाली के स्थान पर संस्कृत को राजभाषा का रूप प्रदान किया। इस काल में ब्राह्मण धर्म का एक प्रमुख लोकप्रिय धर्म 'भागवत धर्म' का उदय और प्रसार हुआ, जिसकी जानकारी हेलियोडोरस के बेसनगर स्तम्भ लेख से होती है।[2]

वैदिक युग में यज्ञों को विशिष्ट महत्ता प्राप्त थी। अश्वमेध यज्ञ राजकीय संरक्षण में हुआ करते थे। डॉ0 बी0 ए0 स्मिथ ने इन यज्ञों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, 'पुष्यमित्र के स्मरणीय अश्वमेध यज्ञ से उस ब्राह्मण प्रतिक्रिया का प्रारम्भ होता है जो समुद्रगुप्त तथा उसके उत्तराधिकार के काल में पाँच सदियों के बाद पूर्ण विकसित हो गयी।'[3]

बौद्ध साहित्यों में पुष्यमित्र शुंग का बौद्ध विरोधी के रूप में वर्णन किया गया है। 'दिव्यावदान' में पुष्यमित्र को 84 स्तूपों को नष्ट करने वाला कहा गया है। इस ग्रंथ के अनुसार 'पुष्यमित्र स्तूपों को तोड़ता हुआ सांकल (स्यालकोट) पहुँचा और यहाँ उसने घोषणा की कि जो व्यक्ति उसे जितने बौद्ध श्रमण का सिर काट कर देगा, उसे 100 दीनार दिया जायेगा।' आर्यमंजूश्रीमूलकल्प और बौद्ध इतिहासकार तारानाथ भी दिव्यावदान का समर्थन करते हैं। इसी आधार पर पुष्यमित्र को बौद्धों का विरोधी और प्रतिक्रियावादी ब्राह्मणों का नेता माना जाता है। किन्तु दिव्यावदान के वर्णन के विरोध में यह तर्क दिया जाता है कि दिव्यावदान पुष्यमित्र शुंग के समकालीन नहीं अपितु बाद की रचना है तथा इसमें कई अविश्वसनीय बातें कही गयी है। उदाहरणार्थ दिव्यावदान में पुष्यमित्र को 'मौर्यवंशीय' कहा गया है।

इस ग्रंथ के अनुसार पुष्यमित्र ने सांकल में यह घोषणा की थी कि वह श्रमण सिर प्रस्तुत करने पर 100 दीनार देगा। इस विषय में उल्लेखनीय है कि पुष्यमित्र के समय में 'दीनार' नामक मुद्रा का प्रचलन ही नहीं हुआ था तथा सांकल भी उसके साम्राज्य में नहीं था। अत: दिव्यावदान के आधार पर पुष्यमित्र को बौद्ध विरोधी नहीं कहा जा सकता है। दिव्यावदान एक बौद्ध ग्रंथ है अत: ब्राह्मण धर्मावलम्बी राजा की आलोचना करना स्वाभाविक ही था अनेक ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिससे पुष्यमित्र के धर्म-सहिष्णुता के विषय में पता चलता है। स्वंय 'दिव्यावदान' में ही यह उल्लेख है कि पुष्यमित्र शुंग ने कुछ बौद्ध व्यक्तियों को मंत्री नियुक्त किया था। मालविकाग्निमित्र नाटक से भी ज्ञात होता है कि पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र जब विदिशा का गवर्नर था तब उसके राजदरबार में भगवती कौशिकी नामक बौद्ध स्त्री थी।

इसके अतिरिक्त शुंग काल में ही भरहुत, बोध गया तथा साँची के स्तूपों को नया रूप प्रदान किया गया। भरहुत स्तूप की प्राचीर पर 'सुगनंरजे' लिखा होना, इस तथ्य की पुष्टि करता है कि स्तूप का यह भाग शुंग काल में ही निर्मित हुआ था। शुंग शासकों में चूँकि पुष्यमित्र शुंग ही सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था, अत: उसकी नीतियों का ही अन्य शुंग शासकों ने अनुसरण किया था। पुष्यमित्र अथवा उसके उत्तराधिकारियों में से ही किसी ने स्तूपों को नया आकार दिया होगा।

पुष्यमित्र नि:संदेह एक धर्म सहिष्णु शासक था, जिसकी पुष्टि इतिहासकार हेमचन्द्र राय चौधरी ने किया है। वे लिखते हैं, 'यद्यपि पुष्यमित्र के वंशज कट्टर हिन्दू थे, किंतु वे असहिष्णु नहीं थे, जैसा कि कुछ लेखकों ने कहा है।'[4] इस विषय में डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी ने लिखा है, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि पुष्यमित्र ब्राह्मण धर्म का संरक्षक और उत्साही हिन्दू था, परन्तु भरहुत के बौद्ध स्तूप और वेदिका जिनका निर्माण शुंग काल के शासन में हुआ था, नि:संदेह दिव्यावदान की कहानी के विरुद्ध पड़ते हैं और पुष्यमित्र की असहिष्णुता को निर्मूल कर देते हैं।'[5]

इस विषय में ई0 बी0 हैवल का कथन भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हैवल के अनुसार, 'बौद्ध ग्रंथों में वर्णित पुष्यमित्र द्वारा बौद्ध मठों के विनाश करने में यदि सत्यता भी हो तो भी यह निश्चित है कि ऐसा उसने बौद्ध धर्म के विनाश के लिए नहीं वरन् उनके (बौद्धों के) संघों, जो राजनैतिक शक्ति के केन्द्र बन गये थे, के विनाश के लिए किया था।'[6]

पुष्यमित्र शुंग एक महान सेनानी, कुशल संगठनकर्ता तथा दूरदर्शी शासक था। सेना के समक्ष अपने सम्राट की हत्या कर देने का साक्ष्य भारतीय इतिहास में बहुत कम मिलती है। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि पुष्यमित्र शुंग एक कुशल सेनापति था तथा उसे अपने सभी सैनिकों का पूर्णत: विश्वास प्राप्त था। यद्यपि कई विद्वान इतिहासकारों ने उसके इस कार्य की

घोर निंदा की है, किंतु देश की रक्षा करने के लिए पुष्यमित्र शुंग के लिए यह नितान्त आवश्यक था।

पुष्यमित्र शुंग ने विदेशी यवन आक्रमणों का दृढ़ता से सामना किया तथा अपनी सामरिक प्रतिभा का परिचय देते हुए न सिर्फ साम्राज्य की रक्षा की, बल्कि साम्राज्य का संगठन कर उसे शक्तिशाली भी बनाया। पुष्यमित्र अपने सांस्कृतिक कार्यकलापों के कारण भी अधिक प्रसिद्ध था। पुष्यमित्र शुंग ने पतनोन्मुख ब्राह्मण धर्म और वैदिक संस्कृति को न सिर्फ पुनर्जीवित किया बल्कि विलुप्त हो रहे गौरव को उच्च शिखर तक पहुँचाया। उसने वैदिक धर्म को राजधर्म घोषित किया तथा पाली के स्थान पर संस्कृत को राजभाषा का रूप प्रदान किया। इस प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप पतंजलि के महाभाष्य तथा मनुस्मृति की रचना हुई। स्पष्ट है कि पुष्यमित्र शुंग ने राजनीतिक उपलब्धियों के साथ-साथ सांस्कृतिक उपलब्धियों को भी प्राप्त किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गोसुंडी अभिलेख।
2. हेलियोडोरस का बेसनगर स्तम्भ लेख।
3. "The memorable horse sacrifice of Pushyamitra marked the beginning of the Brahmanical reaction which was fully developed five centuries later in the time of Samudragupta and his successors.'—Smith Early History of India, p. 211.
4. राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ0 284।
5. "Pushyamitra was no doubt a zealous champion of Brahmanism, but the Buddhist Stupas and raining erected at Bharhut `during the sovereight of the Sungas' would hardly corroborate literary evidence regarding his ebullitions of sectarian rancor.'—— Tripathi, R. S. History of Ancient India, p. 187
6. "It is certain that it was not against Buddhism as a religion but the Sangha as a political power, that such violent means of suppression were directed.' — Havel, Aryan Rule in India, p. 123.

****